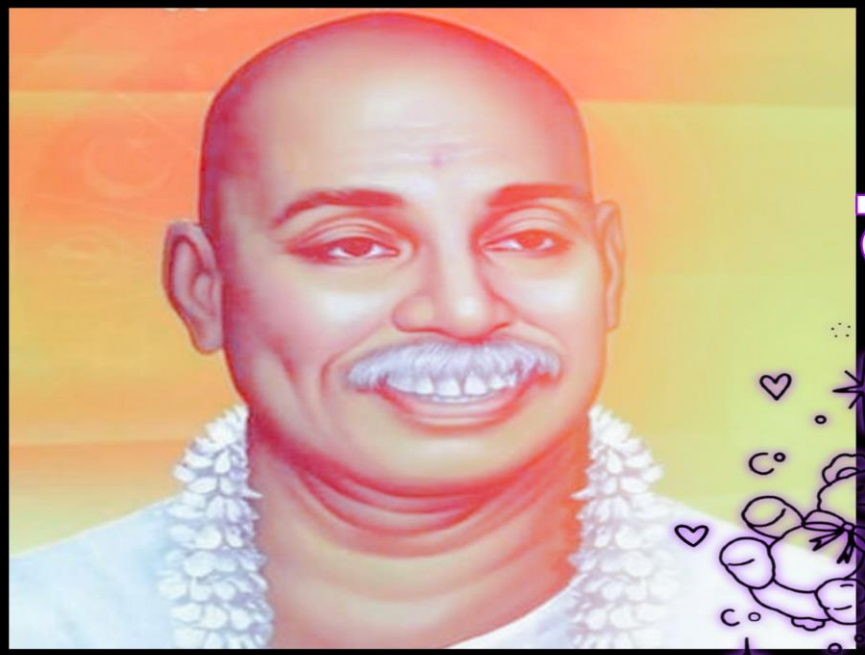

राष्ट्रसंत
तुकडोजी महाराज

SUBSCRIBE

डॉ आरिफ महात

राष्ट्रसंत श्री तुकडोजी महाराज/सच्चा धरम नहीं जाना तूने रे भाई

सच्चा धरम नहीं जाना!! टेक।।
माथे पे चंदन तिलक लगावे, माला गले में भारी।
गरिबन की कदर न जाने, क्या बोलेगा बिहारी।।१।।
गेहूँ में कंकड, पेढे में आटा, दूध में पानी मलावे।
मीठी बातें कहकर बेचे, कसम धरम की खावे।।२।।
सरकारी अफसर होकर भी, सेवा करना नहीं सीखा।
अर्जदारों से खाता है पैसा, देश का गौरव खोता।।३।।
खा ल पडी जो भूमी यह तेरी, मजदूरों को नहिं देता।
देश भकारी बनाया तूने, देश की इज्जत खोता।।४।।
अपनी-अपनी ने क से चलना, यहि तो धर्म सखाता।
तुकड्यादास कहे फर दिन-दिन, क्यों पाप सर पे उठता।।५।।

राष्ट्रसंत श्री तुकडोजी महाराज/ठीक से शासन चलाना मदारि का नहिं खेल

ठीक से शासन चलाना मदारि का नहिं खेल हैं!
वहि चला सकते हैं बन्दे, जो जमाले मेल है।।टेक।।
मोह ना अपना-पराया, नीति-रीती छोड के।
संयमी जीवन है जिसका, जैसी बाती-तेल है।।१।।
शक्ति हो और युक्ति हो, दिल में प्रभू की भक्ति हो।
मुक्ति की पर्वा नहीं है, कर्म का ही बेल है।।२।।
सत्य पर निष्ठा सदा, जनता हितैषी भावना।
मर मटे पर हक्क ना दे, अपने नीयत कल है।।३।।
देश की जनता प्रभू है, सोचकर करता खबर।
कहत तुकड्या वहि रहेगा, जग समजता जेल है।।४।।

राष्ट्रसंत श्री तुकडोजी महाराज/सब में सेवा भाव बढाओ

तभी देश का भला रहेगा, दवेष-स्वार्थ मत लाओ।।टेक।।
आपस में क्यों लडते हो? वे लड़नेवाले मरे कई।
राम नहीं रावण भी नहीं, कुछ देखो आँख उठाओ।।१।।
सेवा का साम्राज्य बडा है, उसे न धोखा आवे।
राष्ट्र पता गांधीसम, सेवा से ही राज्य मलाओ।।२।।
कुटिल भाव मत रखो कसी से, भ्रातृभाव फैलाओ।
अपना-परका भेद हटाकर, जीव जीव अपनाओ।।३।।
'बच्चा बच्चा देश का मा लक' यह आवाज उठाओ।
सब में नीति-चरित्र बढाओ, देश का गौरव गाओ।।४।।
वह हिंदू, वह मुसलमान है वह है जैन-इसाई।
चाहे रहने दो कोइ सब मल, सुख से खाओ-पीओ।।५।।
'मैं साहब' 'मैं देशभक्त हूँ'- यह अ भमान हटाओ।
'हम सब सेवक' वनय से बोलो, सीधा काम चलाओ।।६।।
गरीबों की आत्मा को सुख दो, घर-घर प्रेम लगाओ।
लखना, पढना, रहन-सहन से , सारे लोग बनाओ।।७।।
लाखो पंथ, महंत सभी मल, देश में चत्त लगाओ।
तुकड्यादास कहे तब ही यह '"रामराज्य" कहलाओ।।८।।